وَالَّيۡلِ اِذَا يَغۡشٰىهَا ۝۴ وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰىهَا ۝۵ وَالۡاَرۡضِ وَمَا

और रात की जब उसे छुपाए[4] और आस्मान और उस के बनाने वाले की क़सम और ज़मीन और उस के

طَحٰىهَا ۝۶ وَنَفۡسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۝۷ فَاَلۡهَمَهَا فُجُوۡرَهَا وَتَقۡوٰىهَا ۝۸

फैलाने वाले की क़सम और जान की और उस की जिस ने उसे ठीक बनाया[5] फिर उस की बदकारी और उस की परहेज़ गारी दिल में डाली[6]

قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ زَكّٰىهَا ۝۹ وَقَدۡ خَابَ مَنۡ دَسّٰىهَا ۝۱۰ كَذَّبَتۡ ثَمُوۡدُ

बेशक मुराद को पहुंचा जिस ने उसे[7] सुथरा किया[8] और ना मुराद हुवा जिस ने उसे मा'सियत में छुपाया समूद ने अपनी

بِطَغۡوٰىهَآ ۝۱۱ اِذِ انۡۢبَعَثَ اَشۡقٰىهَا ۝۱۲ فَقَالَ لَهُمۡ رَسُوۡلُ اللّٰهِ نَاقَةَ

सरकशी से झुटलाया[9] जब कि उस का सब से बद बख़्त[10] उठ खड़ा हुवा तो उन से **अल्लाह** के रसूल[11] ने फ़रमाया **अल्लाह** के

اللّٰهِ وَسُقۡيٰهَا ۝۱۳ فَكَذَّبُوۡهُ فَعَقَرُوۡهَا ۙ فَدَمۡدَمَ عَلَيۡهِمۡ رَبُّهُمۡ

नाक़ा[12] और उस की पीने की बारी से बचो[13] तो उन्हों ने उसे झुटलाया फिर नाक़ा की कूचें काट दीं (पाउं काट दिये) तो उन पर उन के रब ने उन के

بِذَنۡۢبِهِمۡ فَسَوّٰىهَا ۝۱۴ وَلَا يَخَافُ عُقۡبٰهَا ۝۱۵ ع

गुनाह के सबब[14] तबाही डाल कर वोह बस्ती बराबर कर दी[15] और उस के पीछा करने का उसे ख़ौफ़ नहीं[16]

اٰيَاتُهَا ۲۱ — ۹۲ سُوۡرَةُ الَّيۡلِ مَكِّيَّةٌ ۹ — رُكُوۡعُهَا ۱

सूरए लैल मक्किय्या है, इस में इक्कीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

وَالَّيۡلِ اِذَا يَغۡشٰى ۝۱ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۝۲ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ

और रात की क़सम जब छाए[2] और दिन की जब चमके[3] और उस[4] की जिस ने नर

4 : या'नी आफ़्ताब को और आफ़ाक़ ज़ुल्मत व तारीकी से भर जाएं या येह मा'ना कि जब रात दुन्या को छुपाए। 5 : और कुवाए कसीरा (कसीर कुव्वतें) अ़ता फ़रमाए। (जैसे) नुत्क़, सम्अ़, बसर, फ़िक्र, ख़याल, इल्म, फ़ह्म सब कुछ अ़ता फ़रमाया। 6 : ख़ैरो शर और त़ाअ़त व मा'सियत से उसे बा ख़बर कर दिया और नेक व बद बता दिया। 7 : या'नी नफ़्स को 8 : बुराइयों से। 9 : अपने रसूल ह़ज़रते सालेह عَلَيۡهِ السَّلَام को 10 : क़ुदार बिन सालिफ़ उन सब की मरज़ी से नाक़ा की कूंचें काटने के लिये 11 : ह़ज़रते सालेह عَلَيۡهِ السَّلَام 12 : के दरपै होने 13 : या'नी जो दिन उस के पीने का मुक़र्रर है उस रोज़ पानी में तअ़र्रुज़ न करो ताकि तुम पर अ़ज़ाब न आए 14 : या'नी ह़ज़रते सालेह عَلَيۡهِ السَّلَام की तक्ज़ीब और नाक़ा की कूंचें काटने के सबब 15 : और सब को हलाक कर दिया, उन में से कोई न बचा 16 : जैसा बादशाहों को होता है क्यूं कि वोह मालिकुल मुल्क है जो चाहे करे, किसी को मजाले दम ज़दन (कुछ कहने की त़ाक़त) नहीं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस के मा'ना येह भी बयान किये हैं कि ह़ज़रते सालेह عَلَيۡهِ السَّلَام को उन में से किसी का ख़ौफ़ नहीं कि नुज़ूले अ़ज़ाब के बा'द उन्हें ईज़ा पहुंचा सके। 1 : "सूरए वल्लैल" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, इक्कीस आयतें, इक्हत्तर कलिमे, तीन सो दस ह़र्फ़ हैं। 2 : जहान पर अपनी तारीकी से

www.dawateislami.net

وَالْاُنْثٰۤى ۙ﴿۳﴾ اِنَّ سَعْیَكُمْ لَشَتّٰى ؕ﴿۴﴾ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ۙ﴿۵﴾ وَ

व मादा बनाए[5] बेशक तुम्हारी कोशिश मुख़्तलिफ़ है[6] तो वोह जिस ने दिया[7] और परहेज़ गारी की[8] और

صَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۙ﴿۶﴾ فَسَنُیَسِّرُهٗ لِلْیُسْرٰى ؕ﴿۷﴾ وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۙ﴿۸﴾

सब से अच्छी को सच माना[9] तो बहुत जल्द हम उसे आसानी मुहय्या कर देंगे[10] और वोह जिस ने बुख़्ल किया[11] और बे परवाह बना[12]

وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۙ﴿۹﴾ فَسَنُیَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ؕ﴿۱۰﴾ وَمَا یُغْنِیْ عَنْهُ مَالُهٗۤ

और सब से अच्छी को झुटलाया[13] तो बहुत जल्द हम उसे दुश्वारी मुहय्या कर देंगे[14] और उस का माल उसे काम न आएगा

اِذَا تَرَدّٰى ؕ﴿۱۱﴾ اِنَّ عَلَیْنَا لَلْهُدٰى ۚۖ﴿۱۲﴾ وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ﴿۱۳﴾

जब हलाकत में पड़ेगा[15] बेशक हिदायत फ़रमाना[16] हमारे ज़िम्मे है और बेशक आख़िरत और दुन्या दोनों के हमीं मालिक हैं

فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۚ﴿۱۴﴾ لَا یَصْلٰىهَاۤ اِلَّا الْاَشْقَى ۙ﴿۱۵﴾ الَّذِیْ كَذَّبَ

तो मैं तुम्हें डराता हूं उस आग से जो भड़क रही है न जाएगा उस में[17] मगर बड़ा बद बख़्त जिस ने झुटलाया[18]

وَتَوَلّٰى ؕ﴿۱۶﴾ وَسَیُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۙ﴿۱۷﴾ الَّذِیْ یُؤْتِیْ مَالَهٗ یَتَزَكّٰى ۚ﴿۱۸﴾ وَمَا

और मुंह फेरा[19] और बहुत जल्द उस से दूर रखा जाएगा जो सब से बड़ा परहेज़ गार जो अपना माल देता है कि सुथरा हो[20] और किसी

कि वोह वक़्त है ख़ल्क़ के सुकून का, हर जानदार अपने ठिकाने पर आता है और ह़रकत व इज़्तिराब से साकिन होता है और मक़्बूलाने ह़क़ सिद्क़े नियाज़ से मश्ग़ूले मुनाजात होते हैं। **3 :** और रात के अंधेरे को दूर करे कि वोह वक़्त है सोतों के बेदार होने का और जानदारों के ह़रकत करने का और त़लबे मआ़श में मश्ग़ूल होने का। **4 :** क़ादिर अ़ज़ीमुल क़ुदरत **5 :** एक ही पानी से **6 :** या'नी तुम्हारे आ'माल जुदागाना हैं, कोई त़ाअ़त बजा ला कर जन्नत के लिये अ़मल करता है, कोई ना फ़रमानी कर के जहन्नम के लिये। **7 :** अपना माल राहे ख़ुदा में और **अल्लाह** तआ़ला के ह़क़ को अदा किया। **8 :** मम्नूआ़त व मुह़र्रमात से बचा **9 :** या'नी मिल्लते इस्लाम को **10 :** जन्नत के लिये और उसे ऐसी ख़स्लत की तौफ़ीक़ देंगे जो उस के लिये सबबे आसानी व राह़त हो और वोह ऐसे अ़मल करे जिन से उस का रब राज़ी हो। **11 :** और माल नेक कामों में ख़र्च न किया और **अल्लाह** तआ़ला के ह़क़ अदा न किये **12 :** सवाब और ने'मते आख़िरत से **13 :** या'नी मिल्लते इस्लाम को। **14 :** या'नी ऐसी ख़स्लत जो उस के लिये दुश्वारी व शिद्दत का सबब हो और उसे जहन्नम में पहुंचाए। **शाने नुज़ूल :** येह आयतें ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ और उमय्या बिन ख़लफ़ के ह़क़ में नाज़िल हुईं जिन में से एक ह़ज़रते सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ "अत्क़ा" हैं और दूसरा उमय्या "अश्क़ा" उमय्या बिन ख़लफ़ ह़ज़रते बिलाल को जो उस की मिल्क में थे दीन से मुन्ह़रिफ़ करने के लिये त़रह त़रह की तक्लीफ़ें देता था और इन्तिहाई ज़ुल्म और सख़्तियां करता था, एक रोज़ ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने देखा कि उमय्या ने ह़ज़रते बिलाल को गर्म ज़मीन पर डाल कर तपते हुए पथ्थर उन के सीने पर रखे हैं और इस ह़ाल में कलिमए ईमान उन की ज़बान पर जारी है, आप ने उमय्या से फ़रमाया : ऐ बद नसीब एक ख़ुदा परस्त पर येह सख़्तियां ? उस ने कहा आप को इस की तक्लीफ़ ना गवार हो तो ख़रीद लीजिये, आप ने गिरां क़ीमत पर उन को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया, इस पर येह सूरत नाज़िल हुई, इस में बयान फ़रमाया गया कि तुम्हारी कोशिशें मुख़्तलिफ़ हैं या'नी ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ की कोशिश और उमय्या की, और ह़ज़रते सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ रिज़ाए इलाही के त़ालिब हैं उमय्या ह़क़ की दुश्मनी में अन्धा। **15 :** मर कर गोर (क़ब्र) में जाएगा या क़ा'रे जहन्नम (जहन्नम की गहराइयों) में पहुंचेगा। **16 :** या'नी ह़क़ और बात़िल की राहों को वाज़ेह़ कर देना और ह़क़ पर दलाइल क़ाइम करना और अह़काम बयान फ़रमाना **17 :** ब त़रीक़े लुज़ूमो दवाम **18 :** रसूल صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم को **19 :** ईमान से। **20 :** **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक या'नी उस का ख़र्च करना रिया व नुमाइश से पाक है।

www.dawateislami.net

لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰۤى ﴿١٩﴾ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ﴿٢٠﴾

का उस पर कुछ एह्सान नहीं जिस का बदला दिया जाए[21] सिर्फ़ अपने रब की रिज़ा चाहता जो सब से बुलन्द है

وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ﴿٢١﴾ ع

और बेशक क़रीब है कि वोह राज़ी होगा[22]

اٰياتها ١١ ﴿٩٣ سُوْرَةُ الضُّحٰى مَكِّيَّةٌ ١١﴾ ركوعها ١

सूरए दुहा मक्किय्या है, इस में ग्यारह आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَالضُّحٰى ﴿١﴾ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ﴿٢﴾ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ﴿٣﴾ وَ

चाश्त की क़सम[2] और रात की जब पर्दा डाले[3] कि तुम्हें तुम्हारे रब ने न छोड़ा और न मक्रूह जाना और

لَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ﴿٤﴾ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ﴿٥﴾

बेशक पिछली तुम्हारे लिये पहली से बेहतर है[4] और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें[5] इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे[6]

21 शाने नुज़ूल : जब ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ह़ज़रते बिलाल को बहुत गिरां क़ीमत पर ख़रीद कर आज़ाद किया तो कुफ़्फ़ार को ह़ैरत हुई और उन्हों ने कहा कि ह़ज़रते सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ऐसा क्यूं किया, शायद बिलाल का उन पर कोई एह्सान होगा जो उन्हों ने इतनी गिरां क़ीमत दे कर ख़रीदा और आज़ाद किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और ज़ाहिर फ़रमा दिया गया कि ह़ज़रते सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ का येह फे'ल मह्ज़ अल्लाह तआला की रिज़ा के लिये है किसी के एह्सान का बदला नहीं और न उन पर ह़ज़रते बिलाल वग़ैरा का कोई एह्सान है। ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने बहुत से लोगों को उन के इस्लाम के सबब ख़रीद कर आज़ाद किया। **22 :** उस ने'मतो करम से जो अल्लाह तआला उन को जन्नत में अ़ता फ़रमाएगा। **1 :** "सूरए वद्दुहा" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, ग्यारह आयतें, चालीस कलिमे, एक सो बहत्तर ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** एक मरतबा ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुवा कि चन्द रोज़ वह्य न आई तो कुफ़्फ़ार ने ब तरीक़े ता'न कहा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم को उन के रब ने छोड़ दिया और मक्रूह जाना इस पर "وَالضُّحٰى" नाज़िल हुई। **2 :** जिस वक़्त कि आफ़्ताब बुलन्द हो क्यूं कि येह वक़्त वोही है जिस में अल्लाह तआला ने ह़ज़रते मूसा علیہ السلام को अपने कलाम से मुशर्रफ़ किया और इसी वक़्त जादूगर सज्दे में गिरे। **मस्अला :** चाश्त की नमाज़ सुन्नत है और इस का वक़्त आफ़्ताब के बुलन्द होने से क़ब्ले ज़वाल तक है, इमाम साह़िब के नज़्दीक चाश्त की नमाज़ दो रक्अ़तें हैं या चार एक सलाम के साथ। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि दुहा से दिन मुराद है। **3 :** और उस की तारीकी आ़म हो जाए। इमाम जा'फ़रे सादिक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि चाश्त से मुराद वोह चाश्त है जिस में अल्लाह तआला ने ह़ज़रते मूसा علیہ السلام से कलाम फ़रमाया। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि चाश्त इशारा है नूरे जमाले मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की त़रफ़ और शब किनाया है आप के गेसूए अम्बरीन से। (روح البیان) **4 :** या'नी आख़िरत दुन्या से बेहतर, क्यूं कि वहां आप के लिये मक़ामे मह़मूद व ह़ौज़े मौरूद व ख़ैरे मौऊ़द और तमाम अम्बिया व रुसुल पर तक़द्दुम और आप की उम्मत का तमाम उम्मतों पर गवाह होना और आप की शफ़ाअ़त से मोमिनीन के मर्तबे और दरजे बुलन्द होना और बे इन्तिहा इ़ज़्ज़तें और करामतें हैं जो बयान में नहीं आतीं और मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना भी बयान फ़रमाए हैं कि आने वाले अह़वाल आप के लिये गुज़श्ता से बेहतर व बरतर हैं गोया कि ह़क़ तआला का वा'दा है कि वोह रोज़ बरोज़ आप के दरजे बुलन्द करेगा और इ़ज़्ज़त पर इ़ज़्ज़त और मन्सब पर मन्सब ज़ियादा फ़रमाएगा और साअ़त ब साअ़त आप के मरातिब तरक़्क़ियों में रहेंगे। **5 :** दुन्या व आख़िरत में **6 :** अल्लाह तआला का अपने ह़बीब صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم से येह वा'दए करीमा उन ने'मतों को भी शामिल है जो आप को दुन्या में अ़ता फ़रमाईं, कमाले नफ़्स और उ़लूमे अव्वलीनो आख़िरीन और ज़ुहूरे अम्र और ए'लाए दीन और वोह फ़ुतूह़ात जो अ़हदे मुबारक में हुईं और अ़हदे सह़ाबा में हुईं और ता क़ियामत मुसल्मानों को होती रहेंगी और

www.dawateislami.net